उत्तरमाला

खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

1.	(1) (अ)	(2) (स)	(3) (ब)	(4) (स)	(5) (द)
			अथवा		
	(1) (ब)	(2) (अ)	(3) (द)	(4) (ब)	(5) (स)
2.	(1) (ब)	(2) (ब)	(3) (अ)	(4) (ब)	(5) (स)
			अथवा		
	(1) (ब)	(2) (अ)	(3) (अ)	(4) (द)	(5) (ब)
3.	(1) (ब)	(2) (स)	(3) (अ)	(4) (स)	(5) (द)
4.	(1) (अ)	(2) (ब)	(3) (अ)	(4) (ब)	(5) (ब)
5.	(1) (स)	(2) (अ)	(3) (द)	(4) (द)	(5) (स)
6.	(1) (स)	(2) (द)	(3) (ब)	(4) (द)	
7.	(1) (ब)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (ब)	
8.	(1) (स)	(2) (अ)	(3) (स)	(4) (स)	(5) (ब)
9.	(1) (स)	(2) (द)	(3) (द)	(4) (द)	(5) (अ)

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

उ.10

(अ) सवार के जाने के बाद कर्नल हक्का-बक्का इसलिए रह गया; क्योंकि उससे दस कारतूस माँगकर ले जाने वाला सवार कोई और नहीं, बल्कि खुद वजीर अली था, जिसे पकड़ने के लिए वे सालों से जंगल में डेरा डाले हुए थे। वह जिस निडरता से खेमें में आया, चालाकी से कर्नल से कारतूस हासिल किए और फिर अपना नाम बताकर उसी प्रकार चला भी गया। कर्नल उसका कुछ भी न बिगाड़ सका। वजीर अली के इस साहस को देखकर कर्नल हक्का-बक्का रह गया।

(ब) निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का यह विश्वास है कि बहुत समय पहले लिटिल अंडमान और कार निकोबार द्वीपसमूह आपस में मिले हुए थे। उस समय निकोबार द्वीप में यह परम्परा विद्यमान थी कि एक गाँव का युवक दूसरे गाँव की युवती से विवाह नहीं कर सकता। तताँरा नामक एक युवक को दूसरे गाँव की युवती वामीरो से प्रेम हो गया तो गाँव वालो ने इसका विरोध और तताँरा का अपमान किया, जिससे क्रोधित होकर तताँरा ने अपनी तलवार धरती में गाड़ दी और खींचते-खींचते वह दूर तक चला गया। इसने धरती के दो भाग कर दिए। एक निकोबार, दूसरा अंडमान।

(स) इंद्रजाल जादूगरी को कहते हैं। इसमें जादूगर पल पल में नए नए चमत्कार दिखाता है। पावस में भी पल पल में प्रकृतत में अदभूत परिवर्तन होते रहते है। कभी घने बादल सारे पर्वत प्रदेश को ढक लेते है, कभी मूसलाधर वर्षा से सबकुछ अदृश्य हो जाता है, कभी पर्वत आसमान में उड़ते हुए लगते है। और कभी तालाबों से उठती जलवाष्प से उमें आग लगाने का भम्र होने लगता है। क्षण क्षण होते इन परिवर्तनों के कारण ही पावस के दृश्य को इंद्रजाल कहा गया है।

उ.11 सबसे पहले बड़े भाई ने रावण का उदाहरण दिया। रावण भूमंडल का स्वामी था। वह चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी राजा उसके अधीन थे। 'आग' और 'पानी' के देवता भी उसके दास थे। वह अंग्रजों से भी अधिक शक्तिशाली और महान था। लेकिन घमंड ने उसका नामो-निशान मिटा दिया। उसे कोई चुल्लू भर पानी देने वाला भी नहीं बचा। इसी प्रकार शैतान को घमंड हो गया था कि वह ईश्वर का सबसे बड़ा भक्त है। इस घमंड के कारण उसे स्वर्ग से नरक वह भीख माँग माँगकर मर गया। बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा कि तुम्हें भी पास होने का घमंड हो गया है, जबकि तुम अपनी मेहनत के पास नहीं हुए हो, बल्कि अंधे के हाथ बटेर लग गई है। इसलिए तुम घमंड मत करो।

ALLEN

उ.12

(अ) नाम के चक्कर में पड़कर लोग इस सत्य को भूल गए है कि ईश्वर एक है। उसके बनाए मनुष्य भी समान है। लोगो ने ईश्वर को नामों के द्वारा बाँट लिया है। वे भूल गए है कि कृष्ण को हम अवतार कहते है और मुहम्मद साहब को पैगंबर। दोनों दूध देने वाले पशुओं को चराया करते थे। हम हिन्दी और उर्दू के लिए भी लड़ते है, लेकिन भूल गए है कि ये एक ही भाषा हिंदवी के नाम है। नाम के आधार पर मानवता का बँटवारा ठीक नहीं है। मुसलमान माँ 'अम्मी' कहते है और हिंदू 'मा'। टोपी ने अपनी माँ को 'अम्मी' कह दिया। इस नाम बदलने से उसके घर में ऐसा भूचाल आया कि दादी सुभद्रा देवी खाना छोड़कर चली गई। उसकी माँ रामदुलारी की आत्मा इस शब्द को सुनकर इतनी आहत हुई कि उसने टोपी की बहुत पिटाई की। उन्हें लगा कि इस शब्द के प्रयोग से उनके घर की परंमपराएँ टूट गई है और धर्म भ्रष्ट हो गया है।

(ब) धन-दौलत के लालच में लोग महत्वपूर्ण संबंधो को नष्ट कर डालते है तथा आपनी सद्भाव को बिगाड़ लेते है। यह बात 'हरिहर काका' कहानी में बहुत अच्छी प्रकार बताई गई है। हरिहर काका के पास पन्द्रह बीघा जमीन थी। उनकेभाई उस जमीन पर नजर गढ़ाए हुए थे और उसे हड़पना चाहते थे।

ठाकुरबारी के महंत की लालची नजरे भी हरिहर काका की जमीन पर टिकी हुई थीं। महंत चाहता था कि हरिहर काका अपनी मौत से पहले अपनी जमीन अपने भाइयों के नाम न कर ठाकुरबाजी के नाम कर दें। हरिहर काका के भाई भी जानते थे कि अगर हरिहर काका ने जमीन ठाकुरबारी के नाम कर दी तो वे कहीं के नहीं रहेगे। पंद्रह बीघे उपजाऊ जमीन दो लाख से अधिक की संपित्त थी। हरिहर काका की यह जमीन उनकी जान की दुश्मन बनी हुई थी। जमीन के लालच में पहले तो ठाकुरबारी के महंत ने उनके साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया तथा उनको ठाकुरबारी में आकर रहने को कहा, परन्तु जब हरिहर काका अपने भाइयों के निवेदन पर आपस अपने घर आ गए तो महंत ने अपने लोगो के साथ उनके घर जाकर उनका अपहरण कर लिया तथा ठाकुरबारी में जोर जबरदस्ती से जमीन ठाकुरबारी के नाम कराने की कोशिश की। उनके अपने ही भाइयों ने भी जमीन के लालच में उनके साथ मारपीट की। महंत तो पराया था, मगर उन्हे अपने सगे भाइयों से यह उम्मीद नहीं थी। यह घटना हमारे मन में बहुत ही बुरा प्रभाव डालती है कि किस प्रकार जमीन जायदाद के लालच में लोग अपने आपसी सद्भाव को भूलकर एक दूसरे के बैरी बन जाते है।

(स) हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा जी बच्चों के प्रति बहुत उदार और संवेदनशील थे। वे बालमन को अच्छी प्रकार समझते थे। बहुत गुस्सा होने पर भी वे बच्चों को बहुत हल्की सी चपत लगाते थे, जिसके लगने पर बच्चे सिर झुकाकर हँसने लगते थे। बच्चों को मारने पीटने वाले अध्यापकों को वे पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने चौथी कक्षा के बच्चों को बर्बरतापूर्वक दंड देने वाले पी. टी. साहब प्रीतमचंद को पहले डाँटा और फिर मुअत्तल कर दिया। बच्चे तन मन से बहुत कोमल और संवेदनशील होते है। गलती करना तो बच्चों का शारीरिक दंड देना आज कानूनन अपराध है। यह मानव मूल्यों के विरूद्ध है। अत: हेडमास्टर शर्मा जी ने बच्चों को कठोर दंड दने वाले पी. टी. साहब के साथ जो व्यवहार किया और ऐसे अध्यापकों के प्रति उनकी जो धारणा थी, वह हमारे विचार से उचित हैं।

उ.13

(अ) इस संसार में सर्वत्र संघर्ष हैं संघर्ष से ही उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। संघर्ष का दूसरा नाम कर्म है। संघर्ष से भयभीत होना अकर्मण्यता है। हमें प्रतिक्षण कर्त्तव्य पालन के लिए प्रतिबद्ध रहना चााहिए। सुख-धन, वैभव एवं ऐश्वर्य में नहीं बल्कि त्याग में है। कर्तव्यविहीन होने पर स्वर्ग जैसा सुख भी एक दिन छिन जाता है। पुरूषार्थ द्वारा दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है। धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरूषार्थों द्वारा चौथा पुरूषार्थ मोक्ष सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। हमें पांडवों की तरह धर्म के लिए संघर्ष करना चाहिए, कौरवों की तरह भोग के लिए नहीं। हमें लक्ष्य के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए अपने मन तथा अपनी इंद्रियों से संघर्ष करना चाहिए, संघर्षमय जीवन ही असली जीवन है। जो लोग संघर्ष से घबराते हैं, उन्हें परमात्मा की स्वर्णिम सहायता का अनुभव प्राप्त नहीं होता। संघर्ष से ही जीवन में सामर्थ्य और क्षमता अर्जित की जाती है, जो जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देती है। संघर्ष अभिशाप नहीं बल्कि जीवन को परिष्कृत करने का अवसर है। मानव जीवन में जब तक उतार- चढ़ाव नहीं आते, तब तक जीवन के वास्तविक सत्य से हम परिचित नहीं हो सकते है।

(ब) स्वस्थ शरीर ही सबसे बड़ा धन है। अत: शरीर को स्वस्थ रखना अत्यंत आवश्यक है, तभी जिंदगी की गाड़ी सुचारू रूप से आगे बढेगी। शरीर को स्वस्थ रखने का सबसे अच्छा उपाय है- व्यायाम। खेलना-कूदना, सैर करना, श्रम करना आदि व्यायाम के ही प्रकार हैं। खेल व्यायाम का सबसे मनोरंजक प्रकार है। क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, वॉलीबाल, बास्केटबॉल आदि खेल खेलने से शरीर में स्फूर्ति, जोश और उमंग पैदा होती है। व्यायाम करने से शरीर चुस्त रहता है तथा मन तरोताज़ा रहता है।। बच्चों का व्यायाम खेलकूद से हो जाता है लेकिन आजकल खेलकूद की जगह टी.वी. ने ले ली है। उन्हें खेलने-कूदने से ज़्यादा टी.वी के सामने बैठकर कार्टून देखना, वीडियों गेम खेलना अच्छा लगता है। यही कारण है कि छोटे-छोटे बच्चों को अनेक बीमारियों ने घेर लिया है। जो लोग प्रतिदिन व्यायाम करते है, उन्हें कम-से-कम बीमारियाँ होती हैं। व्यायाम करने से हमारा शरीर तंदुरूस्त और ताकतवर बनता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम बहुत जरूरी है। जो व्यक्ति प्रतिदिन व्यायाम करते हैं उनके अंदर नीरसता व आलस्य का वास नहीं होता बल्कि, कुछ नया करने की चाह होती है। अत: अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

(स) भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन यापन के दो दृष्टिकोण हैं। एक में मानव स्वलक्ष्यसिद्धी प्रक्रिया व उसके परिणाम पर अटल विश्वास और निष्ठा रखते हुए कर्म में संलग्न रहकर जीवन को अविराम गति देता है। यह स्थिति आशावादी दृष्टिकोण की परिचायक होती है। दूसरी स्थिति ठीक इसके विपरीत होती है, जिसमें मानवमात्र कर्म-प्रतिफल के द्वंद्वात्मक संघर्ष में स्वयं को संतुलित नहीं रख पाता है और आत्मबलहीनता का शिकार हो जाता है। परिणातम: कर्म और प्रतिफल दोनों के प्रति ही उसमें अनासक्ति भाव जागृत होता है, जो निराशा का जनक होता है। इस स्थिति को प्राप्त व्यक्ति निराशावादी दृष्टिकोण के होते हैं। इनमें व्याप्त नैराश्य का कारण व्यक्ति का चिंतन, संस्कार, वातावरण, कार्य शैली, शिक्षा स्तर व दिशा दर्शन होते है। प्रत्येक बाल जब किशोरावस्था में प्रथम चरण रखता है, तो उसके मस्तिष्क में भावी जीवन के कुछ स्वप्न होते है। प्रत्येक बालक जब किशोरावस्था में प्रथम चरण रखता है, तो इस कल्पना के साथ वह विद्यालयी शिक्षा में जुट जाता है कि उन्हीं आदर्शों के सहारे वह अपने स्वप्न साकार करेगा। जब उसके युवा होने का आभास तत्कालीन समाज द्वारा मिलने लगता है, उस समय उसके पास मात्र डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र होते है, जो उसे और उसके भविष्य को और उलझाकर रख चुके होते हैं, क्योंकि विश्वविद्यालय स्तर तक की प्राप्त शिक्षा उसे सुदृढ़ आधार दे सकने में समर्थ नहीं बना पाती। जब वह अपने से अल्पशिक्षित या अशिक्षित को संपन्न देखता है तो उसमें हीनभावना आ जाती है। उस समय उसे वह शिक्षा खोखली और निरर्थक प्रतीत होती है। उसका मनोबल गिरता है और वह युवा अपने को परिस्थितियों के सम्मुख समर्पित कर देता है। समाज के निर्देशन के कारकों द्वारा ऐसे वातावरण की स्थापना न करना जिसमें सैद्धांधिक शिक्षा व स्वस्थ निर्देशन मिले, तो शायद ही कोई युवा नैराश्य का शिकार हो। विषम-से-विषम परिस्थितियों में वह खरा और तपा हुआ सोना सिद्ध हो सकता है। उचित शर्त यही है कि उसे सत्कर्म की और प्रेरणार्थक शिक्षा मिली हो और समाज में व्यवहारीकरण के लिए उचित वातावरण मिला होगा। यह स्थिति गहन चिंतन एवं सत-असत के विवेक द्वारा ही संभव है। चिंतनशील युवा उचित-अनुचित में भेद करने का साहस रखते हैं। ऐसे युवा उद्योगी होते है, वे निश्चय ही नैराश्य के शत्रु, देशभक्त एवं उज्ज्वल राष्ट्रीय भविष्य निर्माता होते हैं। वे अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति के सहारे दुनिया के असंभव कार्य को संभव कर दिखाते हैं।

उ.14 परीक्षा भवन,

मेरठ।

दिनांक 17 जुलाई, 20xx

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक जागरण,

दिल्ली रोड,

मेरठ।

ALLEN

विषय शहर में बढ़ते पदूषण के सदंर्भ में।

मान्यवर,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से जनता, अधिकारियों तथा सरकार का ध्यान शहरों में कल-कारखानों के कारण होने वाले प्रदूषण की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आशा है कि आप मेरे पत्र को अपने प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में प्रकाशित करेंगे।

आज के आधुनिक युग में उद्योग-धंधों का तेजी से प्रसार हो रहा है। इनकी चिमनियों से निकलने वाले धुएँ से वायुमंडल में प्रदूषण की मात्रा बहुत बढ़ गई है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक केंद्रों में मशीनों से निकलने वाले कचरे से भी वायुमंडल मे प्रदूषण बढ़ रहा है। प्रदूषण चाहे कैसा भी हो, स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होता है। वायुमंडल में शुद्ध वायु की कमी विभिन्न रोगों को जन्म देती है। अपने शहरों के चारों ओर स्थित अनेक उद्योग-धंधों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ तथा कोयले की राख आस-पास के निवासियों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाल रही है।

मेरा मुख्यमंत्री, जिलाधीशों तथा प्रदूषण विभाग के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि वे इस ओर ध्यान दें तथा इस संबंध में आवश्यक एवं कठोर कदम उठाएँ, जिससे समस्या का उचित समाधान हो सके।

सधन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

अथवा

परीक्षा भवन,

गाजियाबाद।

दिनांक 6 फरवरी, 20xx

सेवा में,

विद्युत अधिकारी

गाजियाबाद।

विषय विद्युत कटौती के संदर्भ में।

मान्यवर,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान बिजली संकट की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले चार-पाँच महीनों से इस क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति बहुत खराब स्थिति में है। कोई समय निश्चित नहीं है कि बिजली की कटौती कब-से-कब तक की जाएगी और कब आएगी ? बिजली जाती है, तो घंटों तक नहीं आती है।

श्रीमान, मैं एक विद्यार्थी हूँ। बोर्ड की परीक्षाएँ निकट हैं। मेरे जैसे अन्य विद्यार्थी भी इस समस्या से तनाव की स्थिति में रहते हैं। इन्वर्टर भी चार्ज नहीं हो पाता है, गर्मी और मच्छरों का आतंक अलग से है। यदि ऐसा ही चलता रहा, तो हमारे अध्ययन एवं भविष्य पर इसका अत्यंत नकारात्मक असर पड़ेगा। कृपया हमारी समस्या पर ध्यान देते हुए मोहल्ले में नियमित बिजली आपूर्ति के लिए शीघ्रातिशीघ्र ठोस कदम उठाएँ।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

ALLEN

उ.15 रोटरी क्लब, हरिद्वार

20 जून, 20xx **सूचना**

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

रोटरी क्लब द्वारा 25 जून, 20xx को बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में 3 वर्ष से 10 वर्ष से तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए रानीपुर मोड़ पर स्थित हमारे कार्यालय में अपना नाम दर्ज कराएँ।

क, ख, ग

अध्यक्ष : रोटरी क्लब, हरिद्वार

अथवा

जल-विभाग, दिल्ली

19 जुलाई, 20xx **सूचना**

जल आपूर्ति में रूकावट

गोविंदपुरी, दिल्ली के सभी क्षेत्रवासियों को सूचित किया जाता है कि पानी के पाइप की मरम्मत के कारण दिनांक 22 और 23 जुलाई, 20xx को जल की आपूर्ति प्रात: 9 बजे से 6 बजे तक बंद रहेगी। असुविधा के लिए खेद है।

क, ख, ग

जल-विभाग सचिव

उ.16

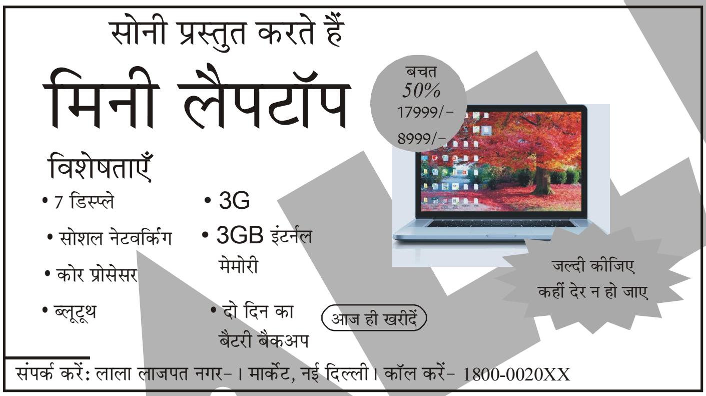

अथवा

कुबेर फाइनेंस

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड कंपनी

मार्कशीट, पर्सनल, अगेंस्ट प्रॉपर्टी आदि समस्त ऋण मात्र 12 घंटे में पाएँ।

ब्याज दर-2% एग्रीमेंट फीस ₹ 900/-

बिना किसी अनावश्यक कागजात के शीघ्र ऋण पाने के लिए संपर्क करें

मोबाइल नं. - 08888888XXX, 066666XX

उ.17 **उक्ति का अर्थ** ''जैसी करनी वैसी भरनी'' उक्ति का अर्थ है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगना पड़ता हैं।

यह सर्वविदित हैं कि मानव अपने कर्मो के आधार पर ही फल भोगता हैं। सत्कर्मी तथा परिश्रमी मानव सदैव श्रेष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त करता है तथा बुरे कर्म करने वाला मानव सदैव कर्मानुरूप व्यर्थ भटकता रहता है। इसी विषय में संबंधित एक कथा प्रस्तुत हैं।

कथा दो भाई थे। दोनों कुशाग्र बुद्धि, परन्तु दोनों के आचरण, व्यवहार और जीवन शैली में बहुत अन्तर था। उसमें राम धैर्यवान व परिश्रमी था, परन्तु राज अधीर, चंचल एवं आलसी था। उनके पिताजी ने उन्हें वार्षिक परीक्षा में श्रेष्ठ अंको से उत्तीर्ण होने का लक्ष्य दिया, ताकि दोनों का देश के प्रतिष्ठित कॉलेज में दाखिला हो सके।

राम ने पूरी मेहनत और योजना के साथ पूरे समय परीक्षा की तैयारी की और परीक्षा में प्रथम स्थान के साथ पास हुआ। तदुपरांत उसने श्रेष्ठ कॉलेज में भी दाखिला पाया और परिश्रम से प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में शानदार भविष्य बनाया। इसके विपरीत राज ने अपना समय व्यर्थ के कार्यो व मित्र मंडलो में व्यतीत किया, जिससे वह विद्यालय की परीक्षा तक उत्तीर्ण न कर सका।

इस प्रकार राज ने खुद के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया और राम कामयाबी की बुलंदियों को प्राप्त कर गया। दोनों ने अपने कर्मो के अनुसार ही फल पाया, इसलिए इस घटना से यह कहावत सही सिद्ध हो गई कि ''जैसी करनी वैसी भरनी।''

सीख इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना-पड़ता हैं।

अथवा

उक्ति का अर्थ ''संगठन में शक्ति होती है'' अर्थात् साथ मिलकर बड़े से बड़ा कार्य भी आसानी से संभव हो जाता है, इसलिए कहा गया है ''शक्ति ही जीवन है।'' हमें आशावादी, दृढ व अनुकूल विचारों को अपनाकर एक साथ संगठन में रहकर कर्म करना चाहिए। संगठन में शक्ति होती है, अकेला व्यक्ति उचित प्रकार कार्य नहीं कर सकता। इसे निम्न कथा द्वारा भली प्रकार समझा जा सकता है।

कथा एक बार अँगुलियों का आपस में झगड़ा हो गया। पाँचों खुद को दूसरे से बड़ा सिद्ध करने में लगी थीं। अँगूठा बोला मे सबसे बड़ा हूँ, उसके पास वाली अँगुली बोली में सबसे बड़ी हूँ। इसी प्रकार खुद को एक-दूसरे से बड़ा सिद्ध करने में जब निर्णय नहीं हो पाया, तो वह सब अदालत में गए। न्यायाधीश ने सारी बात सुनी और सबसे कहा कि आप लोग सिद्ध करो कि आप कैसे बड़े हैं। अँगूठे ने कहा, में सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा हूँ, क्योंकि लोग मुझे हस्ताक्षर के लिए प्रयोग करते हैं। पास वाली अँगुली बोली मुझे लोग किसी इंसान की पहचान के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

उसके पास वाली ने कहा कि आप लोगों ने मुझे नापा नहीं अन्यथा मैं ही सबसे बड़ी हूँ। उसके पास वाली अँगुली बोली मैं सबसे ज्यादा अमीर हूँ, क्योंकि लोग हीरे और जवाहरत की अँगूठी मुझमें ही पहनाते हैं। तभी न्यायाधीश ने एक रसगुल्ला मँगवाया और अँगूठे को उठाने के लिए कहा। अँगूठे ने भरपूर जोर लगाया, लेकिन रसगुल्ला नहीं उठा सका तब सारी अँगुलियों ने एक एक करके कोशिश की, लेकिन सब विफल रहीं।

अंत में न्यायाधीश ने सबको मिलकर रसगुल्ला उठाने को कहा, तो झट से सबने मिलकर रसगुल्ला उठा दिया, तब न्यायाधीश ने कहा कि तुम सब एक दूसरे के बिना अधूरे हो, अकेले रहकर तुम्हारी शक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, जबकि संगठित रहकर तुम कठिन-से-कठिन काम आसानी से कर सकते हो। इसी प्रकार यदि एक लकड़ी को तोड़ा जाए, तो वह आसानी से टूट सकती है, परन्तु यदि लकड़ियों को एकत्रित कर उसे मजबूती से बाँध दें, तो उन लकड़ियों के गट्ठे को तोड़ पाना असंभव हैं।

सीख एक साथ मिलकर संगठन में रहकर किसी भी कार्य को उचित प्रकार से किया जा सकता है। कहा जाता है - ''संगठन में शक्ति होती है'' अकेला चना कभी भाड़ नहीं फोड़ सकता।